

श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी कृत  
श्री हित स्फुट वाणी



श्री हित प्रताप चंद्र गोस्वामी जी महाराज

श्री हित मन मोहन गोस्वामी जी महाराज

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

## सवैया -

द्वादश चन्द्र, कृतस्थल मंगल, बुद्ध विरुद्ध, सुर-गुरु बंक ।  
यही दशम्म-भवन्न भृगू-सुत , मंद सु केतु जनम्म के अंक ॥  
अष्टम राहु चतुर्थ दिवामणि, तौ हरिवंश करत नहिं शंक ।  
जो पै कृष्ण-चरण मन अर्पित, तौ करि हैं कहा नवग्रह रंक ॥१॥

भानु दशम्म, जनम्म निशापति , मंगल-बुद्ध शिवस्थल लीके ।  
जो गुरु होंहिं धरम्म-भवन्न के , तौ भृगु-नन्द सु मन्द नवी के ॥  
तीसरौ केतु समेत विधु-ग्रस , तौ हरिवंश मन क्रम फीके ।  
गोविन्द छाँड़ि भ्रमंत दशौं दिशि , तौ करि हैं कहा नवग्रह नीके ॥२॥

## छुप्पय -

ना जानौं छिन अन्त कवन बुधि घटहि प्रकाशित ।  
छुटि चेतन जु अचेत तेउ मुनि भये विष वासित ॥  
पाराशर सुर इन्द्र कलप कामिनि मन फंघा ।  
परिव देह दुख द्वन्द कौन क्रम काल निकंघा ॥  
इहिं डरहिं डरपि हरिवंश हित, जिनव भ्रमहि गुण सलिल पर ।  
जिहिं नामनि मंगल लोक तिहुँ, सु हरि-पद भजि न विलम्ब कर ॥३॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

## सवैया -

तू बालक नहिं भरयौ सयानप , काहें कृष्ण भजत नहिं नीके ।  
अतिव सु मिष्ट तजिव सुरभिन-पय , मन बंधत तन्दुल जल फीके ॥  
जै श्रीहित हरिवंश नरक गति दुरभर , यम द्वारें कटियत नक छीके ।  
भव अज कठिन मुनीजन दुर्लभ , पावत क्यौं व मनुज तन भीके ॥४॥

## कुण्डलियाँ -

चकई ! प्रान जु घट रहैं , पिय-बिछुरंत निकज्ज ।  
सर-अन्तर अरु काल निशि , तरफि तेज घन गज्ज ॥  
तरफि तेज घन गज्ज , लज्ज तुहि वदन न आवै ।  
जल-विहून करि नैन , भोर किहिं भाय दिखावै ॥  
जै श्रीहित हरिवंश विचारि , वाद अस कौन जु बकई ।  
सारस यह सन्देह, प्रान घट रहैं जु चकई ॥५॥

सारस ! सर बिछुरन्त कौ , जो पल सहै शरीर ।  
अगिन अनंग जु तिय भखै , तौ जानै पर पीर ॥  
तौ जानै पर पीर , धीर धरि सकहि बज्र तन ।  
मरत सारसहिं फूटि , पुनि न परचौ जु लहत मन ॥  
जै श्रीहित हरिवंश विचारि , प्रेम विरहा बिनु वा रस ।  
निकट कन्त नित रहत , मरम कह जानैं सारस ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

### छप्पय -

तैं भाजन कृत जटित विमल चन्दन कृत इन्धन ।  
अमृत पूरि तिहिं मध्य करत सरषप खल रिन्धन ॥  
अदभुत धर पर करत कष्ट कंचन हल वाहत ।  
वारि करत पावार मन्द वोवन विष चाहत ॥  
जै श्रीहित हरिवंश विचारिकैं , मनुज देह गुरु चरन गहि ।  
सकहि तौ सब परपंच तजि , कृष्ण-कृष्ण गोविन्द कहि ॥७॥

### सवैया -

तातैं भैया ! मेरी सौंह कृष्ण गुण संचु ।  
कुत्सित बाद विकारहिं पर धन , सुनि सिख मंद पर तिय वंचु ।  
मणिगन-पुंज ब्रजपति छाँड़त , हित हरिवंश कर गहि कंचु ॥  
पाये जानि जगत में सब जन , कपटी कुटिल कलियुग-टंचु ।  
इहिं परलोक सकल सुख पावत , मेरी सौंह कृष्ण गुण संचु ॥८॥

### अरिल्ल -

मानुष कौ तन पाय, भजौ ब्रजनाथ कौं ।  
दर्वी लैं कै मूढ़ , जरावत हाथ कौं ॥  
जै श्रीहित हरिवंश प्रपंच, विषय रस मोह के ।  
बिनु कंचन क्यों चलैं, पचीसा लोह के ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन

[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

## पद-राग-विलावल -

तू रति रंग भरी देखियत है री राधे , तैं रहसि रमी मोहन सौंव रैन ।

गति अति शिथिल प्रगट पलटे पट , गौर अंग पर राजत ऐन ॥

जलज कपोल ललित लटकति लट , भृकुटि कुटिल ज्यों धनुष धृत मैंन ।

सुन्दरि रहिव कहिव कंचुकि कत , कनक-कलश कुच बिच नख देंन ॥

अधर विम्ब दलमलित आलस जुत , अरु आनन्द सूचत सखि नैन ।

जै श्रीहित हरिवंश दुरत नहिं नागरि , नागर-मधुप मथत सुख सैन ॥१०॥

आनंद आजु नन्द कै द्वार ।

दास अनन्य भजन रस कारन , प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ॥

चन्दन सकल धेनु तन मडित , कुसुम-दास-रंजित आगार ।

पूरन कुम्भ बने तोरन पर , बीच रुचिर पीपर की डार ॥

जुवति-जूथ मिलि गोप विराजत , बाजत पणव-मृदंग सुतार ।

जै श्रीहित हरिवंश अजिर वर वीथिनु , दधि-मधि-दुग्ध-हरद के खार ॥११॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन

[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

## राग-धनाक्षी -

मोहन लाल कैं रँग राँची ।

मेरें ख्याल परौ जिन कोऊ , बात दशौं दिशि माँची ॥

कंत अनन्त करौ जो कोऊ , बात कहौं सुनि साँची ।

यह जिय जाहु भलैं सिर ऊपर , हौ व प्रगट है नाची ॥

जाग्रत-सैन रहत उर ऊपर , मणि कंचन ज्यों पाची ।

जे श्रीहित हरिवंश डरौं काके डर , हौं नाहिंन मति काची ॥१२॥

मैं जु मोहन सुन्यौ वैनु गोपाल कौ ।

व्योम मुनि यान सुर-नारि विथकित भई ,

कहत नहिं बनत कछु भेद यति ताल कौ ॥

श्रवन कुण्डल छुरित रुरत कुन्तल ललित ,

रुचिर कस्तूरि चन्दन तिलक भाल कौ ।

चन्द गति मन्द भई निरखि छबि काम गई ,

देखि हरिवंश हित भेष नंदलाल कौ ॥१३॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन

[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

आजु तू ग्वाल गोपाल सौं खेलि री ।  
छाँड़ि अति मान, वन चपल चलि भामिनी ,  
तरु तमाल सौं अरुझि कनक की बेलि री ॥  
सुभट सुन्दर ललन, ताप पर बल दमन ,  
तू व ललना रसिक काम की केलि री ।  
वैनु कानन कुनित, श्रवन सुन्दरि सुनत ,  
मुक्ति सम सकल सुख पाय पग पेलि री ॥  
विरह-व्याकुल नाथ, गान गुन जुवति तव ,  
निरखि मुख, काम कौ कदन अवहेलि री ।  
सुनत हरिवंश हित, मिलत राधा रमन ,  
कंठ भुज मेलि, सुख-सिन्धु में झेलि री ॥१४॥

वृषभानुनन्दिनी राजति हैं ।  
सुरत-रंग-रस भरी भामिनी , सकल नारि सिर गाजति हैं ॥  
इत उत चलति परत दोऊ पग , मंद गयंद गति लाजति हैं ।  
अधर निरंग, रंग गंडनि पर , कटक काम कौ साजति हैं ॥  
उर पर लटक रही लट कारी , कटिव किंकिनी बाजत हैं ।  
जै श्रीहित हरिवंश पलटि प्रीतम पट , जुवति जुगति सब छाजति हैं ॥१५॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

चलौ वृषभानु गोप के द्वार ।

जनम लियौ मोंहन हित श्यामा , आनंद-निधि सुकुमार ॥  
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल , उच्च मधुर धुनि धार ।  
विविध कुसुम कोमल किशलय-दल , शोभित वन्दनवार ॥  
विदित वेद-विधि विहित विप्रवर , करि स्वस्तिनु उच्चार ।  
मृदुल मृदंग- मुरज- भेरी-डफ , दिवि दुन्दुभि रवकार ॥  
मागध सूत बंदी चारन जस , कहत पुकार-पुकार ।  
हाटक-हीर-चीर-पाटम्बर , देत सम्हार-सम्हार ॥  
चंदन सकल धेनु-तन मडित , चले जु ग्वाल सिंगार ।  
जै श्रीहित हरिवंश दुग्ध-दधि छिरकत , मध्य हरिद्रागार ॥१६॥

राग-गौरी -

तेरौई ध्यान राधिका प्यारी , गोवर्द्धनधर लालहिं ।  
कनक लता सी क्यों न विराजति , अरुझी श्याम तमालहीं ॥  
गौरी गान सु तान-ताल गहि , रिझवति क्यों न गुपालहीं ॥  
यह जोवन कंचन-तन ग्वालिन , सफल होत इहिं कालहिं ॥  
मेरें कहे विलम्ब न करि सखि , भूरि भाग अति भालहीं ॥  
जै श्रीहित हरिवंश उचित हों चाहति , श्याम कंठ की मालहि ॥१७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

आरती मदन गोपाल की कीजियें ।  
देव - ऋषि - व्यास - शुकदास सब कहत निजु ,  
क्यों न बिनु कष्ट रस-सिन्धु कों पीजियें ॥  
अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित नव ,  
वर्तिका घृत सों पूरि राखौ ॥  
कुसुम कृत माल नंदलाल कैं भाल पर ,  
तिलक करि प्रगट जस क्यों न भाखौ ॥  
भोग प्रभु जोग भरि थार धरि कृष्ण पै ,  
मुदित भुज-दण्ड वर चौंर ढारौ ॥  
आचमन पान हित, मिलत कर्पूर-जल ,  
सुभग मुख वास, कुल-ताप जारौ ॥  
शंख दुन्दुभि पणव घंट कल वैनु रव ,  
झल्लरी सहित स्वर सप्त नाँचौ ॥  
मनुज-तन पाइ इहिं दाइ ब्रजराज भजि ,  
सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न जाँचौ ॥१८॥

आरति कीजै श्याम सुन्दर की । नन्द के नन्दन राधिका वर की ॥  
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती । साधु-संगति करि अनुदिन राती ॥  
आरति जुवति-जूथ मन भावै । श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावै ॥१९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!



रहौ कोऊ काहू मनहिं दियैं ।  
मेरैं प्राणनाथ श्रीश्यामा, शपथ करौं तृण छियैं ॥  
जे अवतार कदम्ब भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हियैं ।  
तेऊ उमगि तजत मर्यादा, वन बिहार रस पियैं ॥  
खोये रतन फिरत जे घर-घर, कौन काज अस जियैं ।  
जै श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं, बिनु या रजहिं लियैं ॥२०॥

हरि रसना राधा-राधा रट ।  
अति अधीन आतुर यदपि पिय , कहियत हैं नागर नट ॥  
संभ्रम द्रुम, परिरंभन कुंजन , द्रुंढत कालिन्दी-तट ।  
विलपत, हँसत, विषीदत, स्वेदित , सतु सींचत अँसुवनि वंशीवट ॥  
अंगराग परिधान वसन , लागत ताते जु पीतपट ।  
जै श्रीहित हरिवंश प्रसशित श्यामा , दै प्यारी कंचन-घट ॥२१॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)





!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

### राग-कल्याण -

लाल की रूप माधुरी नैननि निरखि नैंक सखी ।  
मनसिज-मनहरन हास,साँवरौ सुकुमार रासि,  
नख-सिख अँग-अंगनि उमगि,सौभग-सींव नखी ॥  
रँगमँगी सिर सुरँग पाग, लटकि रही वाम भाग ,  
चंपकली कुटिल अलक बीच-बीच रखी ।  
आयत दृग अरुन लोल,कुंडल मडित कपोल ,  
अधर दसन दीपति की छबि,क्यों हूँ न जात लखी ॥  
अभयद भुज-दंड मूल, पीन अंश सानुकूल,  
कनक-निकष लसि दुकूल, दामिनी धरषी ।  
उर पर मंदार-हार, मुक्ता-लर वर सुढार,  
मत्त दुरद-गति, तियन की देह-दषा करषी ॥  
मुकुलित वय नव किशोर, वचन-रचन चित के चोर,  
मधुरितु पिक-शाव नूत-मंजूरी चखी ।  
जै श्री नटवत हरिवंश गान, रागिनी कल्याण तान,  
सप्त स्वरन कल इते पर, मुरलिका वरखी ॥२२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

## राग-मलार -

दोउ जन भींजत अटके बातन ।

सघन कुंज कैं द्वारैं ठाढ़े, अम्बर लपटे गातन ॥

ललिता ललित रूप-रस भीनी, बूँद बचावति पातन ।

जै श्रीहित हरिवंश परस्पर प्रीतम, मिलवत रति रस घातन ॥२३॥

## दोहा -

सबसौं हित निष्काम मति, वृन्दावन विश्राम ।

श्रीराधावल्लभलाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ॥

तनहिं राखि सतसंग में, मनहिं प्रेम रस भेव ।

सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण-कल्पतरु सेव ॥

निकसि कुंज ठाढ़े भये, भुजा परस्पर अंश ।

श्रीराधावल्लभ-मुख-कमल, निरखि नैन हरिवंश ॥

रसना कटौ जु अन रटौं, निरखि अन फूटौ नैन ।

श्रवण फूटौ जो अन सुनौं, बिनु राधा-जस बैन ॥२४॥

॥ इति श्रीहित स्फुटवाणी संपूर्ण ॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन

[www.shriradhavallabhilal.com](http://www.shriradhavallabhilal.com)